लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

'जोनाक रातिर आरति' के कवि

✍ डॉ॰ मालविका शर्मा

अध्यापक सुशील शर्मा रामधेनु-युग के विशिष्ट कवि हैं। असमीया साहित्य के इतिहास में रामधेनु-युग का विशिष्ट स्थान है। छात्रावस्था से ही आपकी सृजनशीलता दिखायी देने लगी और 'रामधेनु' जैसी स्तरीय साहित्यिक पत्रिका में आप उभरते कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। कवि सुशील शर्मा का जन्म ब्रह्मपुत्र के उत्तरी किनारे पर स्थित शुवालकुची के बामुनपारा गाँव में सन् 1935 में हुआ। इनके पिता का नाम पंडित गोपाल शास्त्री और माता का नाम नारायणी देवी था। आपने सन् 1960 में गौहाटी विश्वविद्यालय से असमीया विषय में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की और सन् 1961 से गुवाहाटी के प्रागज्योतिष महाविद्यालय में अध्यापन का कार्य शुरू किया।

कॉटन कॉलेज में पढ़ाई के दौरान ही 'आमि' शीर्षक कविता से कवि के रूप में आपने अपनी पहचान बनायी और सन् 1959 में आपकी प्रसिद्ध कविता 'जोनाक रातिर आरति' रामधेनु पत्रिका में प्रकाशित हुई। 'जोनाक रातिर आरति' के प्रकाशन के साथ-साथ तत्कालीन कवि-समाज में आप एक संभावनापूर्ण कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। कवि के अतिरिक्त सुशील शर्मा एक सफल निबंधकार, उपन्यासकार तथा समाज के प्रति जागरूक व्यक्ति थे। मातृभूमि असम और असम के निवासियों की विभिन्न समस्याओं को लेकर उनका हृदय हमेशा व्यथित रहता था। उनके 'असमीया', 'असमीया इतिहास : संघात और संशय' शीर्षक ग्रंथ जातीय भावनाओं से ओतप्रोत हैं। उनका एकमात्र उपन्यास 'मरीचिका' असम तथा भारतवर्ष की तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों से पाठकों को परिचित कराता है। साथ ही, देश के स्वतंत्रता संग्राम तथा भारतीय जनगण के स्वप्न-भंग का यथार्थ चित्रण भी इस उपन्यास में देखा जा सकता है।

असमीया काव्य-साहित्य के प्रति विशेष योगदान के लिए असम साहित्य सभा ने इन्हें सन् 1991 के दुधनै अधिवेशन में सम्मानित किया। साहित्य सभा के कवि-सम्मेलन में इन्होंने सभापति

के पद को सुशोभित किया। 18 अक्तूबर, 2017 को अपने चाहनेवालों को बिलखता छोड़कर आप परलोक सिधार गए।

अपनी रचनाओं के माध्यम से अध्यापक सुशील शर्मा असमीया पाठक समाज में हमेशा अमर रहेंगे।

संपर्क-सूत्र
सहयोगी अध्यापक
राधागोविंद बरुवा कॉलेज, गुवाहाटी